59.829

श्रद्धेयवर
अपने पूज्य प्राध्यापक
श्री शिवाजी राव देशमुखजी को
सादर भेंट

र. कृ. शास्त्री
१५-६-५८

# प्रेरणा

( कविता-संग्रह )

डा. डिल्ली रमण रेड्डी
कल्याणी रेड्डी स्मारक
हैदराबाद
३४२०

सूर्यकुमार शास्त्री

प्रकाशक—
**राजकुमार,**
आभाधाम, सोनपुर
सारन ( बिहार )

( सर्वाधिकार लेखक के अधीन )

प्रथम संस्करण
मूल्य—एक रुपया आठ आना

US.439
27.2.85

मुद्रक—
राष्ट्रभाषा मुद्रणाल
लहरतारा, बनारस-

# समर्पण

डाक्टर रामसुभग सिंह एम० पी० को

जिनसे

मुझे साहित्य का अनुराग मिला,

राष्ट्रीयता का भाव मिला

और अक्षय स्नेह का

दान मिला ।

# कुछ-कुछ

'प्रेरणा' श्रीसूर्यकुमार शास्त्री की दूसरी कविता-कृति है। पहली पुस्तक 'रश्मिवाण' के प्रणयन के पश्चात्, कवि के साथ कविता-प्रेमियों ने भी यह अनुभव किया था कि 'रश्मिवाण' का अभ्यास एक न एक दिन सुधीजनों के मन-मुकुल की पंखुड़ियाँ अवश्य खोलेगा।

'प्रेरणा' की रचनाएँ शास्त्रीजी की शास्त्रीयता की साक्षी नहीं, प्रत्युत, इनकी रसज्ञता की परिचायिका हैं। इनका मधुर, मिलनसार, सरल, शिशु-सुलभ और सच्चा व्यक्तित्व प्रत्येक रचना की अन्तर्भूमि में वर्त्तमान है। इन तत्त्वों ने कविता की चरम परिणति की प्राप्ति के प्रभाव को, अपने सहज भावों से इतना भावुक बना दिया है कि कहीं भी कोई अवरोध उत्पन्न नहीं होता।

'प्रेरणा' की अधिकतर रचनाएँ गेय गीतों के ही छन्दों में निबद्ध हैं। इन गीतों की भाव-भूमि कविता की ही मिट्टी से बनी है, मगर, इसकी सोंधी सुगन्ध में सङ्गीत का पराग अन्तर्हित है।

'प्रेरणा' के कवि को अत्यन्त ~~आत्मीय~~ आत्मीय के रूप में जानने

के कारण अगर मैं 'कुछ' कहूँगा तो वह 'बहुत कुछ' हो जायगा और 'बहुत कुछ' कहूँगा तो 'कुछ' के हो जाने की आशङ्का है! इसलिए इस 'कुछ-कुछ' की मार्फत मैं इतना ही भर कहूँगा कि श्रीसूर्यकुमार के 'रश्मिवाण' ने उषा-काल में जो अरुणिमा उत्पन्न की थी अब वही तीव्रता 'प्रेरणा' के रूप में अपनी प्रखर तेजस्विता प्रदर्शित करने के लिए सुधीजनों के चर्म और ज्ञान-चक्षुओं के सम्मुख उपस्थित है। मुझे पूरा भरोसा है कि शास्त्रीजी की अनवरत काव्य-निष्ठा इन्हें इनके अभीप्सित लक्ष्य तक पहुँचाएगी और एक दिन साधना से सिद्धि की सीमा में साधिकार प्रवेश पा जाएँगे।

समाज शिक्षा बोर्ड,<br>पटना—४<br>१०—१२—५६

ब्रजकिशोर 'नारायण'

# अनुक्रमणिका




डा: डिल्ली रमण रेग्मी
कल्याणी रेग्मी स्मारक
पुस्तकालय

# १

मेरा जीवन भार न होगा

दुख अम्बुधि में गोता खाकर
मन में यह विश्वास जमा कर
समझा, हिम्मत से तो तैरो
दिल पर दुख का ज्वार न होगा

देखी सागर की गहराई
और हिमालय की ऊँचाई
सब तो मानव-पद के नीचे
इस पर क्यों इतवार न होगा

माना लहरों-सा टकराता
फिर भी बढ़ता जीवन सोता
मरु भी आशा नेह लुटाता
पर अभाव रसधार न होगा
मेरा जीवन भार न होगा

●

## २

साथी, कदम बढ़ाना होगा

दुर्बल हो, यह बात असत है
नश्वर हो, धारणा गलत है
जीवन अक्षय यह यक़ीन कर
आगे कदम बढ़ाना होगा

पद के वे छाले फूटे हैं
जोड़ नसों के भी टूटे हैं
पर हिम्मत तो बल है उत्तम
जाते दम मुस्काना होगा

दुख-सरिता की धारा पर चल
मन में होती होगी हलचल
तो धीरज पतवार सँभालो
जरा नहीं पछताना होगा
साथी, कदम बढ़ाना होगा

●

## ३

ओ हिमाद्रि के नव अभियानी

वीर तेनजिङ्ग और हिलारी
क्या की थी तुमने तैयारी
कूच नगाड़ा बजवाया था
बतलाओ साथी सैलानी

सच बतलाओ उर में कैसे
भाव जगे थे उत्तम से ये
कुदरत की ललकार श्रवण कर
कैसे रुकती भरी जवानी

हिम के भाले तने हुए थे
पत्थर दिल रिपु जमे हुए थे
जरा न की परवाह सखे तुम
पहुँचे शैल-शिखर बर्फानी

मानव-प्रगति-पुस्तिका में फिर
तुमने नव अध्याय लिख दिया
और विश्व को सही बताये
रुके नहीं, क्या हिम्मत ठानी।
ओ, हिमाद्रि के नव अभियानी।

●

## ४

दीप जले घर देहलियों में

तिमिर भागता चला जा रहा
औ प्रकाश भी बढ़ा आ रहा
दूर-दूर से गाँव-गाँव से
अभिनव रोर भरे श्रुतियों में

मेरे जीवन का प्रदीप भी
जूझ रहा तम से, समीप ही
धुँधलेपन के नेज तने हैं
तूफाँ आने को गलियों में

बुझ जायेगी क्यों कर साथी
स्नेह पगे धीरज की बाती
दी मैंने अरुणाई उर की
शेष चटकती नव कलितों में

दीप जले घर देहलियों में

•

## ५

जीवन-ज्योति जगाओ साथी

मग पर डग दो-चार भरे थे
फिर हिम्मत को हार गिरे थे
ये मुमूर्षु—जिनमें जीवन है
ठोकर मार जगाओ साथी

घोर तमिस्रा छायी तो क्या
उठने को तूफाँ है तो क्या
अपने शोणित की लाली से
तम का रङ्ग मिटाओ साथी

माना, तुम हो आज अकेले
सूरज हो जग का अलबेले
गाँधी, बुद्ध, मुहम्मद, लेनिन—
सा तुम काम बनाओ साथी

शत सहस्र हैं लोचन तुम पर
दिखलाओ बल है यह अवसर
उर्वी डिगे, किन्तु तुम निश्चल
नव सन्धान दिखाओ साथी
जीवन ज्योति जलाओ साथी

●

## ६

जलने से तुम क्यों डरते हो

जग का यह तो अटल नियम है
सुख-दुख ही तो जीवन-क्रम है
विश्व विदित है जल कर सोना
कुन्दन होता; क्यों रोते हो

मेंहदी की क्यारी क्या देखी?
हरियाली भी उसकी देखी?
लाली तो उसकी देखी है?
जब पत्थर पर तुम घिसते हो!

गये कभी क्या कृषक खेत में
जीवन खोये सेंत-मेंत में
बीज नष्ट हो अंकुर देता
देखो, निज को तुम छलते हो
जलने से तुम क्यों डरते हो

●

## ७

दिशि दिशि जीवन का कोलाहल

सागर की लहरों में हलचल
शून्य गगन में बादल चञ्चल
गति ही तो जीवन का लक्षण
दिशि-दिशि में उड़ता ज्वाला-जल

हर-हर झर-झर बहते झरने
चलते घूम-घूम मग अपने
कहीं शिला कर चूर बह रही
धारा वह जिसमें डोला जल

तो हताश होना कायरता
शक्ति और गति ही मानवता
पहचानो, अपने को साथी
ढलता उगता नित गोला चल

दिशि-दिशि जीवन का कोलाहल

## ८

दीपक का क्या स्नेह कम गया ?

सिहर-सिहर सिर धुन क्या कहता
कभी फफक बुद-बुद क्या गुनता
सुनो देश के प्रेमी शलभो !
यौवन का क्या वेग थम गया ?

गाँवों में कैसी गमगीनी
हुई दिवाली क्यों फिर सूनी
लक्ष्मी की पूजा करते क्यों
अब लोचन में मेह जम गया

आसमान से ध्वनि आती है
धरती की फटती छाती है
मुर्दों के इस विषम देश में
क्या दावानल तेज कम गया
दीपक का क्या स्नेह कम गया

●

## ६

खिलने को जीवन जलजात

पाता हूँ सङ्केत दिशा से
अश्रु विमोचित नयन निशा से
तिमिर तिरोहित हुआ जा रहा
तृण पर ढुलके पय अवदात

नभ प्राङ्गण में उषाकुमारी
करती आने की तैयारी
खग गाकर करते अगवानी
तम पर की किरणों ने घात

कँपती हवा सिहरता पानी
प्रमुदित हृदय मिटी हैरानी
लुब्ध नयन से प्राण मधुप हैं
देख रहे फूले जलजात
खिलने को जीवन जलजात

●

## १०

तुम रजकण से ही प्रेम करो

यह रजकण निर्मित काया है
सच बातें हैं, न दिखावा है
पर इसमें रहता अमर प्राण
उसकी पूजा का नेम करो

वह सुन्दर है वह ही सत है
इच्छा अति सदा क्रियारत है
कण-कण में वह रमता साथी
उसके अवयव का क्षेम करो

है गूँज रहा उसका ही स्वर
आकाश तलक औ धरनी पर
उसकी मानस की गङ्गा के
पावन पानी से प्रेम करो

●

## ११

जीवन में भरा हुआ मेला

अरमान अमित मानस सर में
उभ-चुभ करता बढ़ता तिर मैं
जीवन की ऐसी दौड़ लगी
धरती नभ तक ठेलम-ठेला

कर्त्तव्यों का बढ़ता ताँता
कुछ कर देता कुछ पा जाता
इस पर ही आशा-पुहुप खिले
जीवन की यह स्वर्णिम बेला

यह अग्नि-शिखा से खेल रहा
यह प्रलय प्रभञ्जन ठेल रहा
जीने का प्रतियोगी बलधर
मृत्युञ्जय-सा चलता खेला
जीवन में भरा हुआ मेला

●

## १२

तम निशा मरण की बीत चली

दुर्द्धर्ष करों से मानव ने
तोला रे बलतम दानव का
बिखरे बादल हो रक्त स्नान
रक्तिम किरणें रण जीत चलीं

पूरब नभ खूँ सा लाल हुआ
उन्नत जीवन का भाल हुआ
कण-कण सस्मित करती सुषमा
गा गीत मदिर दे प्रीत पली

मानव को नव उल्लास हुआ
पंछी बोले—तम नाश हुआ
कर्त्तव्यनिष्ठ की विजय सदा
युग-युग से आती रीत चली
तम निशा मरण की बीत चली

●

## १३

जीवन की नित नई उफानें

सागर का सुनकर गुर्राना
नभ का कड़-कड़ वाद्य बजाना
श्रवण किया धीरज धर साथी
कदम बढ़ाये मुट्ठी ताने

हिंस्र जन्तुओं से ले लोहा
जीवन का मग नित ही जोहा
सरिता त्यों छल-छलकर आयी
प्रीत पगे नव गीत सुनाने

सरिता ने तट कुटी बनायी
और मानवी घर में आयी
तब जीवन रस सोम पानकर
हमने गाए वैदिक गाने

सागर पय-सा नद-जीवन का
आदि अन्त से हीन जा रहा
अस्त्र-शस्त्र से सदा अनाहत
बतलाते इतिहास पुराने
जीवन की नित नई उफानें

•

## १४

मैं न ऐसा सह सकूँगा

मैं करूँ शोणित पसीना
औ लुटे जीवन नगीना
निःस्व होकर भी न मैं अब
हार पल भर वर सकूँगा

तोड़ पथ चट्टान साथी
निरत निर्झर तान छाती
कूल क्षत करता बढ़ा नित
भूल कैसे यह सकूँगा

मूल के वश में मुकुल कब
शूल से घिर गुल रुके कब
सत्य निश्चय अदाह्योऽयं
मरण से क्यों डर सकूँगा
मैं न ऐसा सह सकूँगा

●

## १५

वेदना उकसा रही है

शूल चुभ कर मुकुल के तन
प्रेरणा भरते विषम क्षण
कली खिलकर और तन कर
सुरभि निधि बरसा रही है

सिहरती है दीप की लौ
बेठिकाना कब फटे पौ
तुमुल तम से जूझ, विजयी—
ज्योति वह सरसा रही है

अद्रि पय बन बह रहा है
तम किरण में गल रहा है
मृत्यु पर छा जिन्दगी तो
दर्द से हुलसा रही है

वेदना उकसा रही है

●

## १६

टूट जाए साँस मेरी, आज ऐसा क्यों कहूँ मैं
सामने तम-तोम छाया
सिहरता है रोम, काया
रुधिर से लथ-पथ चरण रे
लोचनों में प्राण आया
टूट जाए ध्यान पथ का आज ऐसा क्यों कहूँ मैं
जले व्रण पर है छिड़कता
नमक मिर्चें और रगड़ता
त्वरित मूर्च्छित पंथ पर फिर
क्यों न पथ रे भूल पाता
टूट जाए सृष्टि का क्रम आज ऐसा क्यों कहूँ मैं
विशद क्लेशों की उदधि में
सीप जैसा हूँ जलधि में
खोजता जो जिन्दगी में
वह न पाता रह परिधि में
भूल जीवन समर जाए आज ऐसा क्यों कहूँ मैं
टूट जाए साँस मेरी आज ऐसा क्यों कहूँ मैं

●

## १७

डरे क्या ! सुन कर शिकायत

सत्य को किसने छिपाया
किरण को तम बाँध पाया
तिमिर के पर्दे टँगे शत
पर न आभा की किफायत

ओ अनलहक सदा बेडर
ओ महा-सुकरात-से नर
चोट से डर ! जहर से डर
तुम करोगे क्या रियायत

लोचनों से लोर ढलता
पीर है या स्नेह गलता
'भ्रमित होकर भूलना मत'
दे रहा कोई हिदायत
डरे क्या ! सुन कर शिकायत

●

## १८

खेलता अंगार से हूँ

जानकर यह ज्वाला गह-गह
निगल जाता रुचिर सब यह
स्नेह घृत देता रहा—तज
कामना संसार से हूँ

क्षार हो सारी विषमता
नष्ट हो जग की विकलता
राग दीपक को जगाता
बीन की झंकार से हूँ

हृदय में विश्वास भर कर
जोर रग-रग का संजो कर
लक्ष्य पर शर फेंक शत-शत
भर रहा टंकार से हूँ
खेलता अंगार से हूँ

# १६

जागो ! जागो हुआ सबेरा
सोच रहे क्या मूँद नयन तुम
तम का राज्य अटल है
भीरु बने क्यों मनु के पुत्रों
तुमसे कौन सबल है
अवलोको लाली दिपती है
पूरब में हलचल है
देखो ! मनु ने नयन तरेरा

## प्रेरणा

पवन डोल करता अभिनन्दन
जग जयकार मनाते
सागर के दिल में है धड़कन
रवि शशि राग सुनाते
रोम रोम धरती का पुलकित
उर अनुराग जगाते
देखो ! रहा न अनय बसेरा

मग में शिलाखण्ड जो आए
चूर उसे कर डाला
घोर विपिन वारिधि मरु पर भी
हमने जादू डाला
निर्भय होकर कदम बढ़ाया
उर में द्वेष न पाला
तोड़ा—बंधन सदा घनेरा

भूलो मत इतिहास वेणु का
वंदनीय ऋषियों का
फ्रेंच लुई सोलह को भूले
बंधन फ्रान्सीसियों का
लेनिन गांधी भूले क्या जो
स्तम्भ मनुज गतियों का
देखो ! आया नया चितेरा

## प्रेरणा

ध्वस्त महल शोषण का रोता
अनयपुञ्ज जलता है
पराक्रमी मानव के भय से
अग-जग भी कँपता है
रचता जग नव सत शिव सुन्दर
सूर्य बढ़ा चलता है
देखो ! आया नया सवेरा
जागो ! जागो हुआ सबेरा

## २०

स्नेह दिए तुम क्या ले लोगे !

दारुण विशद फफोले उर के
उन पर तौल रहे बल करके
गूँज रहा संगीत प्राण का
वश उन पर कैसे कर लोगे

राग प्राण में गूँज-गूँज कर
भर प्रकाश सब कुँज-पुँज पर
हर पल पथ ज्योतिर्मय करता
वश उन पर कैसे कर लोगे

जाग्रत दीप राग प्राण में
ज्यों क्षिति-घट औ मीड़-गान पे
कलाकार की कला निरंकुश
वश उन पर कैसे कर लोगे

स्नेह दिए तुम क्या ले लोगे !

## २१

बात पुरानी हमने मानी

जो सत केवल सदा नवीना
पुलकित जिससे जीवन वीणा
कण-कण थिरक रहा रस पीकर
सुरभि नई नित सुबह पुरानी

नित्य नया निर्माण और लय
पर शाश्वत जीवन की ही जय
जर्जर वस्त्र बदलता निश्चय
किन्तु रूह यह बहुत पुरानी

तिमिर अनय की छाया करता
श्रमित मनुज पछताया करता
सत्यव्रती पहनाया करते
हार तिमिर को कर बे-पानी

बात पुरानी हमने मानी

●

## २२

देखने को आकुल आँखें

चकित अवलोक पहर दो पहर
छकित मन पीकर सुधि के जहर
उड़ा मन पल में जोर बटोर
कल्पना की फैला पाँखें

न टिकती दृष्टि चोटियों पर
न टिकती दृष्टि मोतियों पर
सुनहली शाम रूपहले दिवस
बाँटते चले निरी राखें

बढ़ी जाती है मन की साध
फैलता जाता पंथ अगाध
न इसका छोर न उसका अन्त
अमृत प्लावित मन तरु शाखें
देखने को आकुल आखें

●

## २३

मेरी गति निश्चित ही है
रूकना भी मुश्किल ही है

आया था उस दिन निश्चय
अरमान सजा कर मन भर
जाते क्षण भी निश्चय ही
सब साध समेटे दिल भर
चल दूँगा अभी कहूँ क्या
दिल भी बस मुश्किल ही है

## प्रेरणा

वारिधि लहरों से चञ्चल
मेरी उमङ्ग की धारा
धारा जीवन में पुलकित
पर जग जीवन से खारा
दो घोल समस्त मधुरिमा
यह मीठा ही मुश्किल है

अतएव, हँसो मुस्काओ
कुछ जीवन राग सुनाओ
गतिवान निरन्तर सब कुछ
गति चूम झूम बढ़ जाओ
अन्यथा हाथ मल मल कर
कह दोगे जीवन तिल है

मेरी गति निश्चित ही है
रूकना भी मुश्किल ही है

●

## २५

पथ में कहाँ पल विश्राम

जीवन लड़ रहा घनघोर
पाहन मृत्यु के चहुँ ओर
रुकना है नहीं मंजूर
चलना नित्य का ही काम

आती सुबह आती शाम
कल कल चली सरि अविराम
बजती जिन्दगी की बीन
सरगम ध्वनित आठों याम

शूलों से निकल कर फूल
रच कर मार्ग निज अनुकूल
निर्झर चले गाते गीत
जीवन प्रगति का ही नाम

पथ में कहाँ पल विश्राम

●

## २५

जीवन जीत का ही नाम

चंचल सदा जीवन रूप
जीवन ज्योति स्नेह अनूप
जीवन लहर प्रबल प्रचंड
वह ही सत्य-शिव-श्री नाम

जीवन जोग* एक प्रपात
जीवन क्रुद्ध झंझावात
जीवन अनल जीवन सलिल
जीवन की प्रगति उद्दाम

जीवन मधुर अमृत सिक्त
साहस रिक्त जीवन रिक्त
जीवन की चुनौती नित्य
पौरुष का यही पैगाम
जीवन जीत का ही नाम

---

* मैसूर राज्यान्तर्गत 'जोग प्रपात' दर्शन से प्रभावित

●

## २६

कुछ सोच-समझ पाने को
क्या समय माँगते बोलो

क्षण में ही वे सब साथी
पथ बढ़े तान कर छाती
तुम रोने में सुध खोते
तो मन भर के अब रोलो

देखो रवि नभ में चढ़ता
हो निडर पवन है चलता
फिर जान-बूझ कर यह क्या
मत मलो नयन—अब खोलो

अब भी सतर्क हो जाओ
अब भी कुतर्क तज आओ
मन के मैले भावों को
निज श्रम-सीकर से धोलो

कुछ सोच-समझ पाने को
क्या समय माँगते बोलो

●

## २७

मेरे जीवन की धारा
उस पानी की क्या समता

मन बहलाओ . कुछ घूमो
निज कर को मुख से चूमो
वे आगे-पीछे आकर
हैं गाल बजाते नित जो
मालूम मुझे सब कुछ है
क्या उनकी होगी क्षमता

## प्रेरणा

इतना ही मैंने जाना
सब भुज-बल से ही पाना
रखो विचार भी अच्छा
सब की हो जिससे रक्षा
सब पर प्रतीति हो अपनी
सब में ही वह है रमता

वह तो जीवन सागर है
कितना भरना गागर है
है चाह खुली हैं राहें
वह तो जीवन आकर है
विश्वास चाहिए अपना
सब कुछ कर में आ रहता

ललकार जगत की सुनकर
जो विचलित पथ से होते
वे कायर हैं पामर हैं
शव - से हैं चलते-फिरते
क्या उन पर दया करोगे
देखो, पानी क्या चढ़ता

पर एक बात तुम जानो
लघु तितकी भी जो मानो
उसमें सामर्थ्य बहुत कुछ
उसमें ऐश्वर्य बहुत कुछ
कल्मषता जल सकती है
पी अमृत मृत जग सकता

मेरे जीवन की धारा
उस पानी की क्या समता

●

## २८

मुसाफिर बढ़ता जा तू जा
मनहर मुकुलों का स्वागत ले
मादक फूलों का सौरभ ले
मधुप रे और जरा इतरा
मुसाफिर बढ़ता जा तू जा

पंथ पर बिखराये जो शूल
और जो बने हुए प्रतिकूल
उन्हीं को स्नेह पिलाए जो
मुसाफिर बढ़ता जा तू जा

तिमिर के फैल रहे हैं तार
विघ्न सागर के उठते ज्वार
ज्योति का दीप जलाए जा
मुसाफिर बढ़ता जा तू जा

जहाँ पर गिरा नहीं स्वाधीन
जहाँ पर हुई मनुजता दीन
क्रान्ति का शब्द सुनाए जा
मुसाफिर बढ़ता जा तू जा

•

## २६

ज्वालामय जग को कर दो हे

अन्धकार में आकुल मानव
बोल रहा हर दिशि में दानव
ठोक रहा है ताल भयङ्कर
कपट अनय का पीकर आसव
प्रह्लाद का दुर्बल स्वर है
भर न सका प्रेरणा विभो हे

टूट चुकी आशा धीरज की
सूख चुकी कलियाँ नीरज की
भूल चुका पंथी पथ घर का
छाई नभ में रज घन भ्रम की
मुक्ति-भानु का दर्शन दुर्लभ
त्राहि-त्राहि स्वर श्रवण करो हे

## प्रेरणा

उथल-पुथल सागर के उर में
नभ-अवनी औ गिरि-गह्वर में
कोने-कोने में घर-घर में
बोल रहा युग खर-तर स्वर में
पुनः गगन के एक सिरे में
लाली घपती है देखो हे

उसे देखकर सब आह्लादित
जगती का कण-कण उन्मादित
चुम्बक से सब खिंचे जा रहे
सब उद्वेलित सब आकर्षित
चले जा रहे ध्वनि भरते सब

विषम तिमिर को क्षार करो हे
ज्वालामय जग को कर दो हे

## ३०

गगन पर छा रहा कैसा यह खुशियों का आलम है
सुरभि किस फूल की घुलती हवा भींगी गमागम है

फटी पौ चीर कर विस्तीर्ण छाती तिमिर की नभ से
उठा डेरा अन्धेरा का मिटा डाला है किस फन से
हटा नैराश्य के तम को बहा अनुराग का दरिया
गगन धरती तलक मुस्कान कैसी यह चमाचम है

सजा कर आरती उषा चली है अर्चना करने
दिखा कर धूप चन्दन लेप चलती वंदना करने
दिशाएँ हैं निनादित मधुर स्वर पा विहग के कुल से
सुहागिन किन्नरी दिशि शिंजिनी का स्वर छमाछम है

बढ़ा जो साधना पथ पर सदा रहकर विरत जग से
लगाये प्राण की बाजी चजा अनुरक्त निज मग से
विपुल विघ्नों के बादल पर दिवाकर बन सदा चमका
वही सम्पूर्ण सुन्दर सत्य शिव का भी समागम है
गगन पर छा रहा कैसा यह खुशियों का आलम है
सुरभि किस फूल की घुलती हवा भींगी गमागम है

●

## ३१

मधु ऋतु के मीठे गीत नये

भरते पुलकन औ मधु सिहरन
संशय के छिन्न-भिन्न बन्धन
प्रेरणा मुकुल ज्यों ही विहँसे
तब बोला पिक आ मीत नये!

आकाश स्वच्छ धरती प्रसन्न
चलता स्वच्छंद मधुसिक्त पवन
चञ्चल उमंग की चंचरियाँ
भर रहीं भाव कर नृत्य नये

दिशि दिशि सौरभ के रूप नये
अवनी से नभ के प्रश्न नये
उठ रहे ज्वार ज्यों निरख चाँद
त्यों ही वसंत-संगीत नये
मधु ऋतु के मीठे गीत नये

●

## ३२

पुनः शुभ दिवस आया

घोर तमिस्रा थी जब छायी
और जुल्म की आँधी आयी
स्वतंत्रता की शपथ ग्रहण कर
केवल वह टिक पाया

आन लिये 'राणा प्रताप' की
आग लिये 'लक्ष्मी' के दिल की
यत्न बनाता रहा 'शिवा' सा
वीर कुँवर की काया

## प्रेरणा

पूर्ण-मुक्ति का झंडा प्यारा
पावन रावी तट पर गाड़ा
भारत माँ की जय का नारा
उसने वहाँ लगाया

उसके स्वर की पड़ी दुहाई
तब भारत ने ली अँगड़ाई
उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम
सब ने जोर लगाया

आज सुबह की हँसती लाली
गाँव नगर भरती खुशियाली
प्रजातन्त्र का केतु पञ्चशील
बन जग पर लहराया

पुनः शुभ दिवस आया

## ३३

अब भी मंजिल दूर हमारी

पाँव शिथिल हैं होते जाते
अड़चन अमित नहीं कम पाते
पर जीवन को व्यर्थ बनायें
यह न समझती बुद्धि हमारी

लेश सान्त्वना भी ना पाकर
चोट चतुर्दिशि से खा-खाकर
और अधिक साहस बटोर कर
बढ़ा—हार ले, अगणित भारी

आँसू शोणित का सम्बल ले
आँखों में विश्वास नया ले
नित अपनी गति से आकुल हो
तौल चले अपनी लाचारी

अब भी मंजिल दूर हमारी

●

## ३५

मन हार न माने तिल भर भी

आपद के बादल पर काले
चमकाते गरज गरज भाले
जलधारा की वर्षा होवे
या बरसे नभ से ज्वाला क्या

ज्वालामुखियाँ पथ पर आयीं
तूफ़ानी लहरें घहरायीं
नागिन पैरों में लिपटी क्या

सीमा जो आ आकर बाँधे
कड़ियाँ कर में दे आराधे
कठिनाई में मन को साधे
विघ्न खंड कर जो मुस्काये

मन हार न माने तिल भर भी

●

## ३५

बरस रहे नभ नयन हमारे

सावन घन से दुख के बादल
पुरवाई का चंचल आँचल
सुधि की बिजली समय चक्र से
लुक-छिप करती पथ उजियारे

धरति पर हरियाली छायी
झाँक रही छवि की तरुणाई
तरु कोटर में पंछी गाते
कहाँ छिप रहे प्राण हमारे

अवनी अम्बर ध्वनित मधुर स्वर
कंपित सरि सागर वन निर्झर
उस छवि की छाया दिशि-दिशि लख
व्याकुल हर्षित रोम हमारे

बरस रहे नभ नयन हमारे

●

## ३६

नन्हीं नन्हीं बूँदें रिमझिम—
रिमझिम ढुलक गई

दिवस रात बीते निदाघ के
गिन-गिन पल क्षण पक्ष मास के
मन की टहनी विरस हुई सी
फिर से पुलक गई !

काले कजरारे मेघों ने
अग्रिम दे संवाद सलोने
ताल सुरों में घन बिजली-सी
दिल की झलक नई !

ज्वाला मिटी, नैराश्य तिरोहित
रसा सरस सरिता आलोड़ित
सोंधी मिट्टी के अधरों पर
सुधि की चमक नई

नन्हीं नन्हीं बूँदें रिमझिम—
रिमझिम ढुलक गई

●

## ३७

प्रजातंत्र का आज दिवस है
आओ हम त्योहार मनायें
आजादी की दीपशिखा पर
बलिशलभों को फूल चढ़ायें

सत्तावन में जिन बीरों ने
बलिदानों के ढेर लगाये
बिजली भर दी मरे मेघ ने
आजादी के गीत सुनाये
तोप तमन्चे भी ताने वे
किन्तु जरा-सी देर लगाये
फिर भी उनके बलिदानों ने
आजादी के दीप जलाये

आओ सब मिल प्रेम भक्ति से
उनका हम जयकार मनायें
प्रजातंत्र का आज दिवस है
आओ हम त्योहार मनायें !

## प्रेरणा

तभी हिन्द के भव्य गगन में
फहर चुका था केतु हमारा
शाह बहादुर कुँवर सिंह औ
लक्ष्मी ने था जिसे सँवारा

उसकी इज्जत की खातिर ही
तात्या तोपे स्वर्ग सिधारा
तजे प्राण पर नहीं डिगे वह
नहीं किसी ने मन को मारा

आज हुए पूरे वे सपने
आओ वन्दनवार सजायें
प्रजातन्त्र का आज दिवस है
आओ हम त्योहार मनायें

पलटा अंग्रेजों का पासा
लगा रह गया बलि का ताँता
टूटी नही किसी की आशा
आजादी की देवी की भी
मिटी नहीं थी रक्त-पिपासा

मुण्डों की माला से हमने
वेदी भर दी, छोड़ निराशा

उधम, भगत, बैकुण्ठ, खुदी औ
किन-किन का हम नाम गिनायें
प्रजातन्त्र का आज दिवस है
आओ हम त्योहार मनायें

## प्रेरणा

बलि-आहुति स्वातंत्र्य यज्ञ की
राष्ट्रपिता ने पूरी कर दी
अपनी बलि दे पूर्ण देश की
हिंसा की मजबूरी हर ली

घोर तिमिर ले उठने वाली
आँधी की मगरूरी हर ली
हर ली मानवता की पीड़ा
सीख प्रेम की पूरी कर दी

देश हुआ आजाद राष्ट्र-ध्वज
हिमगिरि पर चढ़कर फहरायें
प्रजातन्त्र का आज दिवस है
आओ हम त्योहार मनायें

आजादी की दीप शिखा पर
बलि शलभों पर फूल चढ़ायें

●

## ३८

गूँजे अमृत रव फिर से स्वतन्त्रता का

दिशि-दिशि से दौड़ पड़े फिर युवकों के दल
चंचल हों ज्यों जाते उस मानव के जल
पा चोट—जिसे कह देते बस कंकड़ का
गूँजे अमृत रव फिर से स्वतन्त्रता का

हिम्मत मत हारो तुम भूमि देख कर साथी
रे धधकाओ वह अनल साँस की भाथी
खुद तो शहीद पर उन्नत राष्ट्रपताका
गूँजे अमृत रव फिर से स्वतन्त्रता का

एटम से डर कर भीरु बनोगे कैसे
तज पंचशील को वन्य बनोगे कैसे
ओ शिवि-दधीचि-सुत तान सूत्र फिर धनुक
गूँजे अमृत रव फिर से स्वतन्त्रता का

और कार्य राष्ट्र-रचना का जरा न रोको
हे पार्थ ग्रंथि-संशय का मन से फेंको
पाओगे फिर वह मार्ग सत्य जय पथ का
गूँजे अमृत रव फिर से स्वतन्त्रता का

●

## ३६

कुमकुम वाले वसन्त के लिए

छन्द लिखूँ।

कैसे छन्द ?

पढ़ कर जिसको

गयन्द से तन वाले

दिल बहलाते हैं

बैशाखनन्दन मन से

रस पाते हैं

बोलो ?

इसके अर्थ क्या हैं

देवि ! सुषमे ! शारदे !

## प्रेरणा

यह सारा जमाना
गाता है
उनका ही फसाना
तथा
उनके पैमाने पर
सबकी नजर है
और,
ये खोये हैं
सोये हैं
स्वाभिमानहीन
अकिञ्चन हैं
निर्बल बने जो हैं
ऐ सरस्वती के पुत्रो!
उठो भी
देखो सही
गौर तो करो
छोड़ तो दो
अपनी कलम को
तक्षक बन डँस लेगी
भीरु परीक्षित की

## प्रेरणा

एक न चलेगी
एक नहीं
अनेकानेक
विष्णु गुप्त—
चन्द्रगुप्त बनेंगे
गोर्की--
लेनिन होंगे
तिलक--
गाँधी होंगे
ये शेष बची—
मनुष्य की डोलती ठठरियाँ
उनमें अब भी सुरभि है
उनके मन की सुरभि
वही केसर की गमक
जिससे गमगम हुआ
अग-जग
और निखिल संसार है
साथ ही--
भूलो मत
उन आँखों को

## प्रेरणा

उनकी ही आँखों में
जय-प्रकाश है
जवाहर की चमक है
सम्पूर्ण आनन्द है
उन आँखों में
दिनकर की ज्वाला भी है
पर्याप्त ज्वाला
निराला
प्रचण्ड निराला
रणोन्मत निराला
क्षार करने के लिए
कल्मषता को
अनृतता को
अनय की विषमता को।

उसी बड़वानल से
बल उठेंगी
लपटें
लाल-लाल
भभक उठेंगी
लोल-लोल

## प्रेरणा

अग्नि शिखाएं
लपक-लपक
लपेट लेंगी
दक्ष की यज्ञशाला।

मजा पायेगा
शिव के अपमान का
सकल विश्व।
तब रश्मिवाण से बिंध जायगा
तिमिर का कण-कण
मिट जायगा
तम राज्य
तिलतिल का।
फिर,
नई सृष्टि में
नया विहान आयेगा
गूँज उठेगा तराना
नमन रश्मिवाण का
देवि!
तव प्रसाद से
प्रेम से

## प्रेरणा

फिर रवि की भैरवी
वीणा के तारों पर
लहरेगी
लेकर सन्देश
सत्य का
प्यार का
सर्वोदय का
थिरक उठेगी जगत ताल में
फिर महादेवी के गीत
शतदल फिर खिलेंगे
भारती फिर गुँजेगी

अस्तु,
लो देव व्रत
आगे बढ़ो
सुभद्रे का ध्यान धर
बेधड़क
बेढब की तन्द्रा त्याग
छोड़ दो नवीन नाग
और,
बजने दो अग्नि वीणा

## प्रेरणा

एक बार
फिर एक बार
भयङ्कर असित शीत-
अन्त के लिए
कुमकुम वाले वसन्त के लिए।

•

## ५०

देव ! तुम मानवता के मुकुट
स्नेह के सुन्दर शुचि उद्गार
तिमिर आच्छन्न गगन की ज्योति
इसी धरती के प्रिय शृङ्गार

हुआ उत्फुल्ल धरा का हृदय
और उन्नत हिलगिरि का भाल
प्रकट तुम हुए, दिवस वह धन्य
धन्य है भारत भाग्य विशाल

तुम्हारा पाकर परस अनिन्द्य
वसन्तानिल ने पाये प्राण
खिले अविकच किंजल्क अनेक
तुम्हारा पाकर के वरदान

## प्रेरणा

धन्य वह भूमि मगध की धन्य
अर्चना की वह धरती धन्य
प्रेरणा की वह धरती धन्य
स्वर्ग से सुन्दर धरती धन्य

धन्य वह बिम्बसार की भूमि
धन्य वह चन्द्रगुप्त की भूमि
धन्य उस प्रियदर्शी की भूमि
कहो ना बुद्ध देव की भूमि

ज्ञान की ज्योति जहाँ पर जली
शान्ति की सुधा जहाँ पर पली
स्नेह की कली जहाँ पर खिली
तृषा की जहाँ जवानी ढली

शाक्य मुनि जहाँ बुद्ध बन गए
प्राण को नूतन स्वर मिल गए
जन्म औ मरण प्रश्न हल हुए
नए अनुभव से पुलकित हुए

बताए तब जीवन के धर्म
'शील,' 'प्रज्ञा,' 'समाधि' के कर्म
प्राप्ति जीते जी हो निर्वाण
खोलकर बता दिए सब मर्म

## प्रेरणा

मिटा कर पाखण्डों के टोप
विषमताओं पर किये प्रहार
शान्ति के उड़ने लगे कपोत
देश-देशान्तर के भी पार

विश्व अवलोक आज भी मुग्ध
काल से अमिट देव तुम सिद्ध
श्रद्धाञ्जलि के ये भाव सुमन
ग्रहण कर लो हे मनुज प्रबुद्ध

चतुर्दिक नभ अवनी तक त्रस्त
तुम्हारी ही बस शान्ति पुकार
अहिंसा प्रेम सत्य के राग
भारती के बज रहे सितार

●

## ४२

पौरुष को तेज पिलाए जो
साहस को जिगर खिलाए नित
विघ्नों की छाती पर चढ़कर
निज भुजा तान मुस्काए जो

वर वीरबली औ लासानी
जिसने केवल बर्छी तानी
जिसकी हुँकारों से सदैव
दुश्मन का था उतरा पानी

# प्रेरणा

जब महाघोर तम छाया था
था पारतन्त्र्य में ग्रसित देश
धन, वैभव, गौरव बचा न था
छटापटा रहा था जब स्वदेश

सब ओर निराशा छायी थी
सब की हिम्मत थर्रायी थी
बेसब्र बहुत कुछ थे फिर भी
पर झुके शीश और छाती थी

रवि अङ्कित केतु एक केवल
था मध्य गगन में लहराता
शासक के दिल पर डोल-डोल
था काल नाग-सा दहलाता

उसके 'प्रताप' का समाचार
श्रुति में दिल्लीपति जब पाते
सूने में छाती पीट-पीट
वे तो मुमूर्ष थे हो जाते

क्या हुआ अखिल भारत जीता
अफगान मराठे सब हारे
पर अरावली की घाटी में
अब भी प्रताप के जय नारे

## प्रेरणा

गीदड़, सूकर वश में आए
और बहुत विजय भी कर लायी
पर बादशाह बेचैन सदा
मेवाड़ केसरी पकड़ाए

थे अडिग उधर राणाप्रताप
स्वातन्त्र्य-शिखा पर शलभ बने
निज प्राण हथेली पर लेकर
स्वातंत्र्य यज्ञ के हवन बने

पर दिल्लीपति की बड़ी आन
मिट्टी में मिलती रही सदा
जो मान बड़ा था बड़ा मान
राणा से कर न सका सौदा

हल्दीघाटी की हार-जीत—
ने एक नया इतिहास गढ़ा
अन्याय हार की शुरू हुई
राणा का जय-अभियान बढ़ा

राणा प्रताप है नाम उसी
स्वातंत्र्य यज्ञ के नेता का
है पारतंत्र्य के घातक का
स्वातंत्र्य समर के नेता का

## प्रेरणा

उस राणा का शुचि नाम श्रवण
कर जोश ज्वार-सा चढ़ आता
शुचि नाम श्रवण कर राणा का
शव भी जीवन पा बढ़ आता

उस राणा की कर याद सभी
ले रहे शपथ फिर से पावन
जब तक तन में हो शेष प्राण
होवे स्वदेश का व्रत-पालन

आ रहा दिशाओं से स्वर जो
स्वातंत्र्य वीर की जय जय हो
राणा प्रताप की जय जय हो
कहते खिल रहे मुकुल हैं जो

●

## ४२

आयी तिथि है अक्तूबर दो
भूल सकोगे ! भूल सकोगे !

इस दिन ही भारत नभ चमका
एक सितारा सब से न्यारा
जिसकी आभा से फिर धवलित
देखा हमने भारत सारा
आज जन्म-दिन उसका साथी
भूल सकोगे ! भूल सकोगे !

## प्रेरणा

जिसके स्वर की मादकता से
जरा देश का यौवन जागा
जिसकी गति पा प्रगतिशील हो
निखिल देश ने तोड़ा तागा—
वही दासता बन्धन साथी
भूल सकोगे! भूल सकोगे!

पाठ पढ़ाया सच ही बोलो
और अहिंसा से जग तोलो
हो निर्भय घूमो दिशि दिशि में
सब हित सुरभि मलय में घोलो
सर्वोदय के द्रष्टा ऋषि को
भूल सकोगे! भूल सकोगे!

चमक रहा बन लाल जवाहर
चमक रहा बन राज इन्द्र जो
दुखित विश्व जिसके कलाम में
खोज रहा है शान्तिबीज को
जो जन-जन का प्रिय वल्लभ था
भूल सकोगे! भूल सकोगे!

आयी तिथि है अक्तूबर दो
भूल सकोगे! भूल सकोगे!

●

## ४३

भारत माँ का सुत जो प्यारा

जिसकी ध्वनि से आन्दोलित नभ
जिसके स्वर में मुखरित भारत
जो जननी का हिमकिरीट बन
बसुधा पूजित सत का साधक
वह अपना अभिमान उदित है
राज इन्द्र दिनमान हमारा
भारत माँ का सुत जो प्यारा

## प्रेरणा

चौहत्तर वर्षों से भारत
जिसकी आभा से आलोकित
जिसने यौवन स्नेह दान कर
राष्ट्र-दीप को किया उर्ज्वसित
दमित दमा से नहीं थकित पर
आश्चर्यित जिससे जग सारा
भारत माँ का सुत जो प्यारा

जो विदेह-सा ज्ञानवानवर
जो अशोक-सा स्नेह दान कर
चन्द्रगुप्त का तेज लिये जो
वर्द्धमान-सा शान्त दिगम्बर
भारत के उस सूत्रधार की
जय से गुंजित अग-जग सारा
भारत माँ का सुत जो प्यारा

●

५

## ४४

जय हे कर्मठता के प्रतीक
हे सरस्वती के वरद पुत्र
हे ज्ञान-शिखर के अभियानी
तेरी चर्चा ही यत्र-तत्र
दर्शन इतिहास खगोल गणित
साहित्य नीति विज्ञान अमित
सब पर प्रतीत ले बहुगुणज्ञ
हे सेनानी हे प्रेम-मूर्ति
हे विविध विघ्न की छाती पर
तू एड़ लगा बढ़ने वाला
स्वातंत्र्य समर के हे नायक
तू नव भारत गढ़ने वाला

●

## ४५

जवाहर, तुम ही एक प्रकाश

दिशाओं में तम स्रस्त वितान
अस्त हो गया कभी दिनमान
पंथ ऊबड़-खाबड़ अनजान
भुलाता जाता अन्तर गान
रही रुक रह रहकर के साँस...

भुला कर बापू के उपदेश
बटोरा हमने कितने क्लेश
न उर में रही दया भी लेश
कलंकित हुआ सुरम्य स्वदेश
नियति का कैसा यह परिहास

## प्रेरणा

आह से गुँज रहा आकाश
धरा अब फटी विकट है त्रास
मनुजता का हो रहा विनाश
मनुज का मनुज खा रहे माँस
दुखद दारुण है यह इतिहास

सकोगे तुम क्या इन्हें समेट
करोगे इनको मटियामेट
लुटाने को सर्वस्व सचेष्ट
मृत्यु के पूर्व प्राण की भेंट
अस्थियों का सुन लो यह हास

सभी की दृष्टि तुम्हारी ओर
सभी के आकुल मन के मोर
रहे सब देख गगन का छोर
विखंडित बाँधे आशा डोर
कहाँ वे अभ्र ! मिटाते प्यास

●

४६

बीती बातें बीते सपने
अब अधुना का ध्यान करो हे !

संसृति की धारा है चंचल
कण-कण जागृत जीवन प्रतिपल
तिनका-सा यह दहता-बहता
चला जा रहा पथ पर अविरल
तट पर आँख मिलाना मत फिर
बढ़ो, न पश्चाताप करो हे !

## प्रेरणा

पद्म-नाल के कोमल बन्धन
नव कलिका का स्नेहालिंगन
मीड़ भ्रमर का मादक मोहन
श्रुति से मन में छाया ज्यों घन
लरज रहे, दामिनी दमकती
तज कर सब बौछार सहो हे !

हीरा रत्न हेम अन्वेषण
हेतु रौंदते जो गिरि कानन
उनसे जा सन्देश सुनाता
व्यर्थ फिरे फैलाये दामन
अपनी भुजा उठाकर, नूतन
निज का अनुसन्धान करो हे !

जीवन की धार बही छल-छल
अभिलाषा की लहरें चुल-बुल
ज्यों करुणा द्रवित आदि कवि की
उर गंगा की धारा अविरल
सब सीमित भी पर पूर्ण मुक्त
वह भी तो अनुमान करो हे !

प्रेरणा

अस्तु, पुनः निज पन्थ बढ़ो हे।
लक्ष्य शैल के शीश चढ़ो हे!
और प्रतीति के झण्डे से फिर
जगह जगह पर नींव गढ़ो हे।
आ जायगा मार्ग स्वयं ही
स्वागत में, अभियान करो हे।
बीती बातें बीते सपने
अब अधुना का ध्यान करो हे!

●

## ४७

सुनहली किरणे पूरब से चली आती है मुस्काती
धरा नभ पर नया ही रङ्ग कूची से है चमकाती
लहर है शान्त सागर की उछलती नव उमङ्गों से
ह्वागहो और गङ्गा है तरङ्गित नव तरङ्गों से
हिमालय शीर्ष पर है केतु पञ्चशीलों का फहराता
उछलता-कूदता है हिन्द सागर और उफनाता

## प्रेरणा

कि मिट्टी में सुरभि लेकर नयी आयी है आजादी
सुनहली किरण पूरब से चली आती है मुस्काती
वजन आवाज की देखो लगाओ कान मिट्टी से
प्रकम्पित एशिया की भूमि पूछो बात मिट्टी से
सहस्रों ने कटाये शीश अनगिन बस इसी खातिर
सुनोगे तुम सदा उनकी लगाओ कान मिट्टी से
कि उनकी ही बुलन्दी से हुआ रौशन है सब साथी
सुनहली किरण पूरब से चली आती है मुस्काती
मिटी दासत्व की छाया मगर वे चाल चलते हैं
चलाते नित्य मनमानी अभी वे कर गुजरते हैं
अभी एटम परीक्षण वे हमारे घर में करते हैं
कहाँ सुनते हमारी वे न दिल से ही सहमते हैं
कि उनकी इस चुनौती पर भुजाएँ हैं फड़क जाती
सुनहली किरण पूरब से चली आती है मुस्काती
जरा देखो जवाहर लाल का है भाल सिकुड़ा क्यों
हमारा पेशवा चिन्तित कि लगता आज उखड़ा क्यों
जवानो पूछ लो बढ़कर कहो यह प्राण हाजिर है
वतन के वास्ते कर दो इसे टुकड़े ही टुकड़े क्यों
जरा गर्दन नवाओ किन्तु झुकने दो न निज छाती
सुनहली किरण पूरब से चली आती है मुस्काती

भुलानी ही पड़ेगी देश की खातिर सभी झंझट
मिटाओ देश की गर्दिश मिटाओ देश का सङ्कट
नई आभा छिटकती है छिटकने दो इसे साथी
समूचे एशिया में युग नया है ले रहा करवट
कि उसके विगुल की ध्वनि है तरङ्गित और बलखाती
सुनहली किरण पूरब से चली आती है मुस्काती
धरा नभ पर नया ही रङ्ग कूची से है चमकाती

## ४८

साँझ होती जा रही

पंथी बढ़ता चल क़दम
लालिमा से रङ्ग गया
सारी प्रतीची का गगन
दूर धूमिल और लोहित
हो रहा कुछ है सघन
धरित्री गुमसुम पड़ी
चुपचाप सम्प्रति है पवन

## प्रेरणा

क्या हुआ तूफान का
आसार सम्मुख आ रहा
भीति क्या तम तोम का
आगार बढ़ता आ रहा
आज वे भी तौल ले
निज वेग औ शोणित गरम

लक्ष्य पर जो हैं बढ़े
तज मोह अपने प्राण का
कौन सम्मुख टिक सका
उस वीर के उस मान का
गिन्नियां अवलोकते
वे जान पाये क्या मरम

घोर तम के हृदय तल का
चीर बढ़ता जो चला
लो विलोको ज्योति के
वह तीर चढ़ता जो चला
थके हारे को रहा—
ललकार, उसको है नमन....



डा. डिल्ली एसग रेड्डी
कल्याणी रेड्डी स्मारक
पुस्तकालय

## प्रेरणा

अब भला कैसे रुकोगे
पौर-पद जब आ गया
नाप डाले चल पदों से
ठौर का हद आ गया
आरती लेकर सफलता
स्वयं आयी है सहम
साँझ होती जा रही
पंथी बढ़ाता चल कदम